हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजनः

चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान

संपादक

डॉ. बीना कुमारी नायर वी.जी

डॉ. महालक्ष्मी के

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजन:
चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान

संपादक:
डॉ. बीना कुमारी नायर वी जी
डॉ. महालक्ष्मी के

CREATIVE
STUDIO
571/2A, Anna Salai, Teynampet,
Chennai - 600 018

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजन:
चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान

संपादक:
डॉ. बीना कुमारी नायर वी जी
डॉ. महालक्ष्मी के

Elderly in Hindi Literature: Depiction, Challenges, and Solutions

Editors: **Dr Beena Kumari Nair V G & Dr Mahalakshmi K**

First Edition: August 2025
Pages: 226
Printed at Rathna Offset, Chennai
Cover Design & Layout: Vijayan, Creative Studio
ISBN: 978-81-977848-9-7

Price: Rs. 400/-

Published by
CREATIVE STUDIO
571/2A, Anna Salai, Teynampet,
Chennai - 600 018
vijayanstudio@gmail.com
Cell: 9840275550

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1. वृद्धावस्था में हरिहर काका का जीवन संघर्ष
   - डॉ. मो.सहिदुल इस्लाम 17

2. आधुनिक हिन्दी कहानियों में चित्रित वृद्धावस्था
   - डॉ. शाज़िया फरहाना. आई 23

3. ज्ञानरंजन कृत "पिता" कहानी में चित्रित वृद्ध की स्थिति
   - डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवास 30

4. कृष्णा सोबती के उपन्यास समय सरगम में अनतर्निहित वृद्ध मन की गूँज **- डॉ. रविता भाटिया** 37

5. साहित्य और लोककथाओं में वृद्धावस्था की छवि
   - रजनी.एस 42

6. बुजुर्गों की उपेक्षा-एक बढ़ती हुई सामाजिक समस्या
   - डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी 48

7. साहित्य और लोक कथाओं में वृद्धावस्था की छवि
   - डा.के.एस. प्रणतार्तिहरन 53

8. साहित्य में वृद्धावस्था की छवि
   - डॉ के पद्मिनी पीएचडी 57

9. साठोत्तरी कहानियों में चित्रित वृद्धों की समस्याएँ
   - डॉ. सुनील पाटिल 62

10. आधुनिक समाज में बुज़ुर्गों की बदलती भूमिका
    - डॉ. रामायण प्रसाद टण्डन 66

11. गोविंदमिश्र कृत 'शाम की झिलमिल' उपन्यास में चित्रित बुज़ुर्गों की बदलती दुनिया **- बी. कमला** 69

12. बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता: एक सामाजिक चेतावनी
    - डॉ.ई.अनुराधा 75

Scanned with OKEN Scanner

गोविंदमिश्र कृत 'शाम की झिलमिल' उपन्यास में चित्रित बुज़ुर्गों की बदलती दुनिया

शोधार्थी: बी. कमला, हिन्दी विभाग,
शोध निर्देशिका: डॉ. अनुराधा पाकलपाटि,
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस,
टेक्नोलॉजी एंड एडवांस स्टेडीज (विस्टास)

जीवन की संध्या का संघर्ष: 'शाम की झिलमिल':

'शाम की झिलमिल' हिंदी उपन्यास साहित्य में वृद्धावस्था को केंद्र में रखकर रची गई एक महत्वपूर्ण कृति है, जो न केवल उम्र के अंतिम पड़ाव पर पहुँचे पात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्षों को रेखांकित करती है, बल्कि पारिवारिक ढाँचे और सामाजिक संरचना में आ रहे मूलभूत परिवर्तनों पर भी गंभीर विमर्श प्रस्तुत करती है। विवेचित उपन्यास लेखक का बारहवाँ उपन्यास है, जिसमें उन्होंने वृद्धावस्था की संजीदा और उपेक्षित अवस्था को अत्यंत सूक्ष्मता और करुणा के साथ चित्रित किया है। विवेचित उपन्यास, वृद्धजनों की उस पीड़ा को स्वर देता है, जो उन्हें सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक स्तर पर झेलनी पड़ती है। उपन्यास में दर्शाया गया है कि किस प्रकार बुज़ुर्गों को परिवार में निर्णयों से दूर कर दिया जाता है, उनके अनुभवों की उपेक्षा होती है और उन्हें केवल एक बोझ या दया के पात्र के रूप में देखा जाता है। यह न केवल बुज़ुर्गों की आत्मसम्मान की भावना को आहत करता है, बल्कि उन्हें सामाजिक और मानसिक एकाकीपन की ओर भी ढकेलता है। उपन्यास 'शाम की झिलमिल' समकालीन हिंदी साहित्य में इसलिए भी विशेष स्थान रखता है, क्योंकि यह केवल वृद्ध पात्रों की समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि उनके भीतर की आकांक्षाओं, आत्मसम्मान की माँग और स्वतंत्र निर्णय लेने की चाह को भी गंभीरता से प्रस्तुत करता है।

आधुनिकता की दौड़ में खोते रिश्ते और उपेक्षित वृद्ध: एक सामाजिक यथार्थ:

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता और तकनीकी प्रगति के प्रभाव ने न केवल मानव जीवन को तीव्र गति दी है, बल्कि इसके समानांतर हमारी पारंपरिक सांस्कृतिक और

Scanned with OKEN Scanner

पारिवारिक संरचनाओं को भी गहरा आघात पहुँचाया है। आधुनिकीकरण के इस दौर में मनुष्य का झुकाव भौतिकवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर अधिक हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप परिवारों में आत्मीयता, परस्पर सम्मान और भावनात्मक जुड़ाव में गिरावट देखी जा रही है। भारतीय समाज, जहाँ परंपरागत रूप से वृद्धों को अत्यंत सम्मान और आदर प्रदान किया जाता रहा है, वहाँ अब वृद्धजन उपेक्षा, तिरस्कार और भावनात्मक दूरी का सामना कर रहे हैं। उपनिषदों में कहा गया है- "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव"1, अर्थात माता-पिता देवतुल्य माने गए हैं। किंतु यह एक विडंबना है कि आज उन्हीं माता-पिता को अपने जीवन के अंतिम चरण में अपनों के बीच ही पराया बनकर जीना पड़ रहा है। उक्त उपन्यास 'शाम की झिलमिल' इस बदलते सामाजिक यथार्थ और वृद्धजनों की जिजीविषा, मानसिक संघर्ष तथा उपेक्षा को साहित्यिक संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है।

पीठ से उतरा बोझ : ज़िम्मेदारियों से निवृत्ति और मृत्यु का भाव:

उपन्यास 'शाम की झिलमिल' में वृद्धावस्था के मनोवैज्ञानिक अनुभवों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। विशेष रूप से ज़िम्मेदारियों से निवृत्ति और मृत्यु की ओर बढ़ते आत्मबोध को उपन्यास की प्रारंभिक पंक्तियों में ही अभिव्यक्त किया गया है। उपन्यास की शुरुआत इस वाक्य से होती है-"पत्नी को गुज़रे साल से ऊपर हो गया।"2 यह वाक्य न केवल जीवन-साथी की अनुपस्थिति की पीड़ा को प्रकट करता है, बल्कि एक वृद्ध विधुर के अकेलेपन की गहन अनुभूति को भी रेखांकित करता है।

वृद्ध पात्र की सोच में यह भाव भी स्पष्ट है कि जीवन भर की ज़िम्मेदारियाँ अब समाप्त हो चुकी हैं-"आखिर बोझ- जो हम दोनों पचास वर्षों पीठ पर लगे चल रहे थे, वह उतर गया-मेरा और उसका भी। काफी दिनों तक मुझसे यह ख़्याल हिल्गा रहा कि उसकी तरह मैं भी एक दिन चला जाऊँगा-अधिकतर लोग सत्तर-अस्सी के बीच चले ही जाते हैं....तो मैंने अपनी 'विल' लिख डाली और फुरसत हो गया।"3 इस संवाद में मृत्यु के बोध को भी अत्यंत सहजता से व्यक्त किया गया है। यह कथन मृत्यु के प्रति आत्मस्वीकृति और मानसिक तैयारी को दर्शाता है। साथ ही यह कथन जीवन के उत्तरार्ध में बोझ-मुक्त होने की अनुभूति के साथ-साथ एक भावनात्मक रिक्तता को भी प्रकट करता है।

समय का बोझ: विदुर जीवन की सामाजिक विडंबना और वृद्धावस्था की आंतरिक पीड़ा:

लेखक वृद्ध पात्र के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि पत्नी के न रहने से समय की नियोजित संरचना भंग हो जाती है। अब समय का कोई सुनिश्चित उपयोग नहीं रह गया है। इस अनुभव को पात्र स्वयं इन शब्दों में अभिव्यक्त करता है-"पत्नी नहीं

Scanned with OKEN Scanner

थी तो मेरे पास अब दोस्ती के लिए समय ही समय था, लेकिन यहाँ एक दिक्कत-बहुत ही महीन सी-घुस आयी। मैंने देखा कि दोस्ती की जिस मंडली में बैठना पहले बड़े स्वाभाविक ढंग से हो लेता था, अब.....जैसे दोस्ती को हमेशा में यह एहसास दे बैठता कि मेरे पास समय ही समय है और मैं उनके साथ ज्यादा.....और ज्यादा बैठने की फ़िराक में बराबर रहता हूँ।"4 यह उद्धरण इस सामाजिक विडंबना की ओर संकेत करता है कि विदुर जीवन केवल भावनात्मक खालीपन ही नहीं, बल्कि सामाजिक असमानता और असहजता की भी स्थिति उत्पन्न करता है। सामाजिक बैठकों में भी वह आत्मसंतुलन नहीं रह पाता, क्योंकि 'समय की अधिकता' एक प्रकार की हाशिये पर पड़ी हुई उपस्थिति का संकेत देने लगती है।

मित्रों की मृत्यु और वृद्ध मन की वेदना:

वृद्धावस्था की एक और त्रासदी है- मित्रों की क्रमशः होती मृत्यु और उसके साथ जुड़ी यादों का विलुप्त हो जाना। जैसे-जैसे प्रियजनों का देहांत होता जाता है, व्यक्ति स्वयं को इतिहास के एक खाली फ्रेम की तरह महसूस करने लगता है। उपन्यास का पात्र अपनी व्यथा इस प्रकार प्रकट करता है- "अच्छे लोग संसार से जल्दी क्यों उठा लिए जाते हैं,- वे थोड़ा अधिक दिन पृथ्वी पर रहे, तो अच्छाई की खुशबू न फैले? उस परिवार के साथ बिताए गए अलग-अलग समय के टुकड़े- सब उनके जाने के साथ चले गए। क्या अब मैं ऐसी ही खबरों को सुनने के लिए जीवित हूँ?...मृत्यु दूर कहीं एक मित्र या परिचित की होती है...और निकाल लिया जाता है मेरे जीवन से एक कालखण्ड...जैसे शरीर से गोश्त का एक टुकड़ा। ये अगर इसी तरह निकाले जाते रहे, तो मैं क्या बचूँगा...।"5

मृत्यु की प्रतीक्षा और अस्तित्व का खालीपन:

उपन्यास में वृद्धावस्था की गहराई से जुड़ी हुई मानसिक पीड़ा और अस्तित्वगत प्रश्नों को अत्यंत मार्मिकता से चित्रित किया गया है। वृद्ध पात्रों के जीवन में जब एक-एक कर साथी छूटने लगते हैं, तो न केवल सामाजिक सम्बंधों का ताना-बाना टूटता है, बल्कि जीवन का उद्देश्य भी धुंधला पड़ने लगता है। "अच्छे लोग, मेरे साथी, मेरे हमउम्र..... एक-एक करके उठते जाते हैं। पीछे छूट जाने की पीड़ा ढोते हुए, उनके छोड़े गए स्पेस से जो खालीपन उठता है, उसे घूरते हुए पड़े रहना..... बेबस, मृत्यु की प्रतीक्षा में बैठे रहना! संसार मन का नहीं, साथ कोई नहीं, जीने का कोई मकसद नहीं.... है कोई एक वजह.... कि मैं जीवित रहूँ?"6

यह कथन वृद्धावस्था में सामाजिक संबंधों के विघटन और आत्मबोध की पीड़ा को उजागर करता है। जीवन की अंतिम अवस्था में जब संबंध, उद्देश्य और संवाद सब छूटते हैं, तो मनुष्य स्वयं के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाने लगता है।

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय समाज में नारी-परंपरा और परिवर्तन के बीच की भूमिका:

उपन्यासकार भारतीय और विदेशी स्त्रियों के जीवन-संघर्षों की तुलना करते हुए यह दर्शाते हैं कि भारतीय नारी का पारिवारिक और सामाजिक ढाँचे से गहरा संबंध होता है, जो उसे अकेलेपन से उबरने की सामर्थ्य प्रदान करता है। स्त्री-जीवन की सामाजिक व्याप्ति को व्यक्त करते हुए लेखक कहते हैं- "विदेशी औरतों के बारे में ज़्यादा नहीं मालूम, पर भारतीय नारी....वह पति के बिना आराम से रह सकती है। इतनी सारी चीज़ें हैं, जिनसे वह जुड़ सकती है- लड़का-बहू, बेटी-दामाद उनके बच्चे। अपने लड़के-बच्चे न हों तो सौतेले चलेंगे। मौसियाँ-फूफियाँ-मामियाँ। और नहीं तो दूर बैठे नाती-पोतों के लिए स्वेटर बनाना, बड़ी बनाना, आलू के पापड़ बनाना या अचार डालना! भले ही विधवा हों, रिश्तेदारों के यहाँ शादी-ब्याह में धड़ाधड़ जाना, ढोलक बजाना।"7

वृद्धों की तुलना मवेशियों से-मानवीय संवेदना का अंत:

उपन्यासकार ने वृद्धजनों की स्थिति की तुलना मवेशियों से करते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया है कि जब समाज वृद्धों को मात्र उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकित करता है, तो मानवीय संवेदना का पतन प्रारंभ हो जाता है। उपन्यास में यह धारणा इन कटु शब्दों में प्रकट होती है- "देख तो लिया! मरें साले। उन्हें मर ही जाना चाहिए। हमारे देश की एक बड़ी समस्या है यह बूढ़े...किसी काम के नहीं, जिए चले जाते हैं। ख़ासी जनसंख्या हो गई है इनकी। मवेशियों को देखिए...बूढ़े, बीमार, हड्डियों का ढांचा, किसी काम के नहीं...उनका क्या हो सकता है...क्या होता है...बूचड़खाना...।"8 यह कथन समाज की अमानवीय सोच की पराकाष्ठा को उजागर करता है, जहाँ जीवन की गरिमा को मात्र उपयोगितावादी कसौटी पर आँका जाता है। यदि ऐसी प्रवृत्ति बढ़ती रही, तो वह सामाजिक और नैतिक विघटन का रूप ले लेगी, जिसमें करुणा, सम्मान और संबंधों की गहराई समाप्त हो जाएगी। यह उपन्यास समाज को इस चिंतन पर आत्ममंथन हेतु बाध्य करता है।

लिव-इन की आकांक्षा: वृद्धावस्था में स्वतंत्रता बनाम परंपरा:

उपन्यास 'शाम की झिलमिल' में वृद्धावस्था के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक यथार्थ को गहराई से उकेरा गया है। विशेषतः वृद्धावस्था में पुरुष और स्त्री के सोच और स्वतंत्रता की सीमाओं को लेकर समाज में व्याप्त विरोधाभासों को लेखक ने गंभीरता से विश्लेषित किया है। उपन्यास का वृद्ध पात्र आधुनिक सोच का प्रतिनिधित्व करता है, जो विवाह की औपचारिकता से परे, 'लिव-इन' संबंध को स्वीकारने को तैयार है। दूसरी ओर विधवा स्त्री पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक प्रतिबद्धताओं के कारण इस स्वतंत्र विकल्प को स्वीकार नहीं कर पाती। "आगे मैं नहीं सुन सका, कान बंद हो गए। इक्कीसवीं सदी में विधवा वाली बात, एक पढ़ी-लिखी औरत के मुँह से? अजीब

Scanned with OKEN Scanner

है हमारा देश और यह समाज जहाँ एक समय में ही कितने समय रहते हैं- मैं इक्कीसवीं सदी में था। इस उम्र में उसके साथ रहने की सोचता था, विवाह की भी क्या ज़रूरत...सिर्फ साथ रहना- 'लिव-इन'...तो उसके भीतर अट्ठारहवीं शादी ठहरी हुई थी...वृंदावनी विधवा! उसे भी दोष कैसे दिया जाये! पचासवें दशक के पारंपरिक संस्कारों वाले एक परिवार में पली-बढ़ी वह। विवाह हुआ उससे भी अधिक तंग सोच वाले घर में। यह उसका कुसूर नहीं कि उसका जीवन चार-पाँच रिश्तेदारों के घरों और तीन-चार शहरों की चौहद्दियों में सिमटकर रह गया। अब वह अपने लड़के-बहू की आश्रिता है...जो इस उम्र में पहुँचकर सब हो जाते हैं। उससे यह शिकायत कैसे की जा सकती है कि वह मेरी तरह स्वतंत्रता-पीड़ित क्यों नहीं है...अगर मेरे साथ नहीं रह सकती, तो अपने पति वाले मकान में पेंशन के सहारे क्यों नहीं रहती...स्वतंत्र? क्यों नहीं निकलती यहाँ से...।"9

निष्कर्ष:

निष्कर्षत:, 'शाम की झिलमिल' समकालीन हिंदी साहित्य में वृद्धावस्था के यथार्थ को अत्यंत गहराई, संवेदना और आलोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने वाली विशिष्ट कृति है। विवेचित उपन्यास में वृद्ध पात्रों के मानसिक संघर्ष, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता की आकांक्षा और सामाजिक अमानवीयता के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है। संपति के लिए पुत्र द्वारा पिता पर लगाए गए यौन आरोप, वृद्धों की तुलना मवेशियों से, आत्महत्या को "डिप्रैशन" कहकर टाल देने की प्रवृत्ति- ये सभी घटनाएँ आधुनिक समाज के नैतिक विघटन की ओर संकेत करती हैं। वहीं दूसरी ओर लिव-इन जैसे मुद्दों के माध्यम से वृद्ध पुरुष और स्त्री के दृष्टिकोण के भेद को उजागर करते हुए यह भी स्पष्ट किया गया है कि समय और संस्कार दोनों का गहरा प्रभाव व्यक्ति की सोच पर पड़ता है। अंततः शाम की झिलमिल केवल वृद्ध-गाथा नहीं, बल्कि पूरे समाज के विवेक, करुणा और उत्तरदायित्व पर एक गंभीर प्रश्नचिन्ह है, जो पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ सूची:

1. तैतिय-उपनिषद, रामकृष्णा मट्ट, मैलापुर, पृष्ठ सं- 40
2. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 5
3. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 6

Scanned with OKEN Scanner

4. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 6-7

5. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 8

6. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 11

7. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 15

8. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 5

9. गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृष्ठ सं- 126

Scanned with OKEN Scanner